उपसंहार

नयी कहानी की वैचारिक पृष्ठभूमि में द्वितीय विश्व युद्ध एवं आज़ादी के बाद देश में आए राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक परिस्थितियों एवं परिवेश में परिवर्तन हैं। देश की आज़ादी के पश्चात् भारतीय मानस में नवीन आशा और उत्साह का संचार तो हुआ ही साथ-साथ एक वैचारिक पुनर्जन्म भी हुआ। परंतु जल्दी ही यह आशा और उत्साह, निराशा एवं हतोत्साह में बदल गया, जब भारत विभाजित हो गया। जिस स्वतंत्रता को हम भारतीय राजनीतिक उपलब्धि मानते थे वहीं देश-विभाजन ने भारतीय मानस पटल के सामने विचित्र-सा सांस्कृतिक संकट खड़ा कर दिया, जिसका परिणाम हमें आज तक भुगतना पड़ रहा है। देश-विभाजन के पश्चात् सांप्रदायिक भावना, लूट, बलात्कार, दंगा, हत्या, शोषण आदि घृणित घटनाओं ने भारतीय जनता को गहराई से प्रभावित किया। विभाजन की यह घटना हमारे लिए केवल स्थूल और शारीरिक रूप से ही दुर्घटना नहीं था बल्कि एक मानवीय त्रासदी भी थी जिसने लाखों लोगों को भावात्मक, विचारात्मक, मानसिक और आत्मिक स्तरों पर प्रभावित किया। भारतीय राजनेताओं से यह आशा की गई थी कि आज़ादी के बाद हमारे लिए ऐसे सपनों का भारत बनाएँगे जिससे हम गर्व से कह सकें कि भारत अब भी सोने की चिड़िया का देश है और आगे भी रहेगा। आज़ादी के तुरंत बाद एक और घटना घटी, वह गाँधी जी की निर्मम हत्या थी । इस घटना ने भारतीय मानवमूल्यों एवं आदर्शों को संकट में डाल दिया। इसके पश्चात् राजनीतिक परिवेश में अवसरवादिता, बेईमानी और भ्रष्टाचार ने गहरी अव्यवस्था पैदा कर दी।

देश के राजनीतिक घटनाक्रम ने सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियों को भी प्रभावित किया। भारतीय समाज की संयुक्त परिवार की अवधारणा भी प्रभावित हुई। शहर के निर्माण के फलस्वरूप एक ओर मध्यवर्ग का उदय हुआ तो दूसरी तरफ उपेक्षित गाँवों को शहरों से जोड़ने का प्रयास हुआ। जाति प्रथा, सामंती प्रथा या जमींदारी प्रथा का उन्मूलन हुआ। ग्रामीणों, कृषकों एव श्रमिकों के लिए रोजगार की व्यवस्था की जाने लगी। कल-कारखाने, उद्योग धंधों के

विकास से भारतीय समाज में व्यापक परिवर्तन हुआ। देश के आर्थिक विकास की दृष्टि से पंचवर्षीय योजनाओं का सूत्रपात तथा क्रियान्वयन हुआ। सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्रों में बड़े तथा छोटे उद्योगों का विकास हुआ। उत्पादन के साधनों में वृद्धि हुई। पश्चिम में हुई वैज्ञानिक प्रगति ने मनुष्य के दृष्टिकोण को भौतिकवादी तथा वैज्ञानिक कर दिया। अध्यात्म, रहस्य तथा अमूर्त विषयों के प्रति वह संदेह की दृष्टि से देखने लगा। भारतीय चिंतन के क्षितिज पर मार्क्स, फ्रायड, सार्त्र, कामू आदि विचारकों का भी प्रभाव पड़ा। मानव के सार्वभौमिक, सर्वोपरि सत्ता के रूप में देखा जाने लगा तथा मानव के आंतरिक जीवन की अपेक्षाओं पर भी विचार किया जाने लगा। इस प्रकार राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिस्थितियों ने भारतीय परिवेश को बदल डाला। नयी कहानी आंदोलन का जन्म इन्हीं परिस्थितियों और घटनाओं के दबाव में हुआ। नयी कहानी के कहानीकारों ने इन परिस्थितियों एवं परिवेश में आए बदलाव को देखा और अनुभव किया तथा उसे कहानी के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद परिस्थितियों एवं परिवेश में आए परिवर्तन के फलस्वरूप कथा-साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होना स्वभाविक था। अतः पूर्ववर्ती कहानियों की अपेक्षा इस दौर की कहानियों के कथ्य एवं शिल्प में नवीनता और विशिष्टता आई जिसके कारण नयी कहानी की अपनी पहचान बनी। 'नयी कहानी' नए परिवेश और नए यथार्थ की उपज है। जीवन का नया यथार्थ, परिवेश, परिप्रेक्ष्य, संदर्भ, समाज, व्यक्ति, युगबोध, दृष्टिकोण आदि नयी कहानी की संवेदना और शिल्प के आधार हैं। नयी कहानी पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर आए संबंधों के बदलाव की कहानी है। संबंधों का यह बदलाव परिवार में माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका, नई-पुरानी पीढ़ी आदि अनेक स्तरों पर देखा जा सकता है। नयी कहानी ने प्रेम की एक नई धारणा विकसित की है। नए कहानीकारों से प्रेम को एक शाश्वत धारणा के रूप में न मानकर परिस्थितियों एवं परिवेश की सापेक्षता में ग्रहण किया हैं। नए कहानीकारों ने प्रेम में त्रिकोण प्रेम और यौन संबंधों का खुलकर चित्रण किया है। प्रेम संबंधों में आर्थिक उपार्जन का कितना महत्व है, ये नयी कहानियों में

मिलता है । नयी कहानी मुख्यतः मध्यवर्गीय जीवन की कहानी है । इसमें मध्यवर्गीय जीवन के महत्वाकांक्षाओं और अंतर्विरोधों का सबसे अधिक चित्रण मिलता हैं। नयी कहानी में एक ओर जहाँ शहरी जीवन के यथार्थ का चित्रण है वही दूसरी ओर ग्रामांचल के स्थिति और यथार्थ को भी चित्रित किया है । देश-विभाजन के पश्चात् उत्पन्न स्थिति औद्योगीकरण, बढ़ती जनसंख्या आदि के दुष्परिणाम क्या होते हैं, इसका नए कहानीकारों ने ध्यान रखा है। नए कहानीकारों पर अस्तित्ववाद के स्पष्ट प्रभाव को उनकी कहानियों में देखा जा सकता है। इसके अलावा नयी कहानी ने भारतीय जीवन में व्याप्त पाखंड, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अस्थिरता, असंतुलन, अराजकता, असंतोष, पीड़ा, अस्पष्टता, निराशा, नौकरशाही, अविश्वास आदि तमाम स्थितियों को नयी कहानी चित्रित करती है। नयी कहानी शिल्प की दृष्टि से भी पूर्ववर्ती कहानी से भिन्न है। नए कहानीकारों ने शिल्प के प्रति एक सर्वथा नवीन दृष्टि अपनाई और कहानी के रचनात्मक स्तर पर नए की खोज की। उन्होंने पुराने रूपबंध को तोड़ा, फार्मूलाबद्धता को समाप्त करके, कहानी को उसके पुराने खाँचे से अलग किया। सांकेतिकता, प्रतीक-विधान, बिम्ब-विधान, भाषा आदि अनेक स्तरों पर नयी कहानी नवीनता प्रदान करती है। अतः कहा जा सकता है कि नयी कहानी कथ्य और शिल्प की दृष्टि से सही मायनों में पूर्ववर्ती कहानी से विशिष्ट है।

हिंदी कहानी-समीक्षा की व्यवस्थित शुरुआत नयी कहानी आंदोलन से शुरू होती है। इससे पूर्व कहानी-समीक्षा के सिद्धांत व प्रतिमान उतने विकसित, ठोस एवं सूक्ष्म नहीं है, जितनी कविता की आलोचना के हैं। कहानी आलोचकों के सामने कहानी वैसी चुनौती बनकर कभी नहीं आती जैसी चुनौती बनकर कविता आती है। सर्वप्रथम नामवर सिंह ने कहानी की चुनौती के महत्व को समझा और कविता के समकक्ष कहानी-समीक्षा को ला खड़ा किया। नामवर सिंह की यह युक्ति वरदान सिद्ध हुई जब उन्होंने जनवरी-1956 के कहानी विशेषांक में प्रकाशित अपने लेख 'आज की हिंदी कहानी' में नयी कहानी के अस्तित्व की पहचान करते हुए कहा, **"आज की कहानी पर विचार करते समय सबसे पहले मेरे मन में यह सवाल उठता है कि 'नयी कविता' की तरह**

'नयी कहानी' की भी कोई चीज है क्या ? और हम पाते हैं कि 'नयी कहानी' नाम से कोई आंदोलन अभी तक नहीं चला है।"

नामवर सिंह द्वारा 'नयी कविता' की तर्ज पर नयी कहानी की बात सुनते ही कहानीकारों तथा आलोचकों ने चर्चा शुरू कर दी। इस तरह कहानी पर इतनी चर्चा होना ही कहानी-आलोचना की शुरुआत थी। इसे कहानी-आलोचना का प्रस्थान बिंदु भी कहा जा सकता है। कहानी के औचित्य के सवाल को लेकर नामवर सिंह द्वारा स्थापित प्रतिमानों के पक्ष-विपक्ष में कहानीकारों तथा आलोचकों ने बोलना शुरू कर दिया। नए कहानीकारों में राजेंद्र यादव, मोहन राकेश तथा कमलेश्वर ने नामवर सिंह पर जमकर आरोप लगाए। उनका मानना था कि नयी कविता की तर्ज पर नयी कहानी का मूल्यांकन नहीं हो सकता है। नए कहानीकारों की अपेक्षा नयी कहानी की आलोचना लिखने वाले आलोचक कम हैं। नामवर सिंह के अलावा धनंजय वर्मा, देवीशंकर अवस्थी, सुरेन्द्र चौधरी, इन्द्रनाथ मदान, मधुरेश आदि प्रमुख आलोचक हैं। कहानीकारों की आलोचना दृष्टि में कुछ पूर्वाग्रह, थोड़ी भावुकता, बड़बोलापन एवं अहंकार और ऐसे फतवे थे, जो किसी प्रकार के विश्लेषण पर आधारित न थे। ऐसी स्थिति में आलोचकों द्वारा लिखी गई कहानी की आलोचना सबसे महत्वपूर्ण है। कहानी की आलोचना में नामवर सिंह की 'कहानी : नयी कहानी' की महत्वपूर्ण भूमिका और योगदान को इंकार नहीं किया जा सकता। सबसे पहले नामवर सिंह ने ही हिंदी आलोचना का ध्यान कहानी की ओर मोड़ने में पहल की और कहानी को मनोरंजन या स्कूली पठन-पाठन की स्थिति से उठाकर जीवंत साहित्यिक सरोकार का केंद्र बनाया। उन्होंने कहानी की परम्परागत काव्य रूढ़ियों को तोड़कर आधुनिक विचार को कहानी की आलोचना में स्थापित किया। इसके साथ ही उन्होंने हिंदी कहानी को एक नई रचनात्मक चेतना की ओर मोड़ने में पहल की। अपने विवेक से कहानी आलोचना को एक प्रासंगिक भाषा देने की भी कोशिश की। अनेक आरोपों- प्रत्यारोपों के बावजूद कहानी की आलोचना में जो नवीनता पैदा की उसे भुलाया नहीं जा सकता। वास्तव में नामवर सिंह हिंदी आलोचना के रचना-पुरुष हैं जिन्होंने लगभग उपेक्षित कहानी विधा को 'कहानी : नयी कहानी' के माध्यम से स्थापित किया और कहानी-आलोचना की नई ज़मीन तैयार की । इतना ही नहीं उन्होंने कहानी की पाठ-प्रक्रिया की पद्धति भी तैयार की। इस प्रकार कहा जा सकता है कि नामवर सिंह की 'कहानी : नयी कहानी' का नयी कहानी की वैचारिक पृष्ठभूमि में अविस्मरणीय योगदान रहा है।